

# भारत उदय : कितना सच?

## कुछ तथ्य

### बच्चे

हरसला ७-८ लाख बच्चे दस्त जैसी बीमारी से मर जाते हैं, जिनका बचाव आसानी से किया जा सकता है।

विश्व के ४० प्रतिशत कुपोषित बच्चे भारत में हैं।

भारत में ही सबसे ज्यादा बाल मजदूर और बेसहारा बच्चे पाये जाते हैं।

विश्व में सबसे ज्यादा नेत्रहीन बच्चे भी भारत में ही हैं, जिनकी संख्या २.७० लाख है।

### नारी

१९९८ में १.३० लाख नारी विरोधी हिंसक अपराध दर्ज किए गए। सन २००० में इन अपराधों की संख्या १.५० लाख थी।

३१ जनवरी २००४ को जयपुर के विशेष न्यायालय ने १९८७ के देवराला सती कांड के ११ आरोपियों को बर्ती किया। इनमें से कुछ वरिष्ठ भाजप नेता भी हैं। राजस्थान की भाजप सरकार ने इस फैसले को उच्च न्यायालय में चुनौती नहीं दी है।

विश्व स्त्री-पुरुष लैंगिक अनुपात औसतन ९९०:१००० है। भारत में यह अनुपात ९३३:१००० है। विश्व के ६ सबसे धनी आबादी वाले देशों में भारत का स्त्री-पुरुष लैंगिक अनुपात सब से कम है।

हाल ही में भंग हुई लोक सभा में सिर्फ १० प्रतिशत सदस्य महिलाएं थीं।

सामान्य भारतीय नारी सिर्फ १.२ वर्ष की शिक्षा प्राप्त करती है।

एक लाख बच्चों जन्म के पीछे करीब ३८५-४६० माताएं मर जाती हैं। यह मृत्यु दर प्रस्तावना पीड़ासे मरनेवाली माताओं की मृत्यु के मामले में हमें विश्व के दूसरे स्थान पर रखती है।

जन्म देते समय मरने वाली माताओं में २०% की मृत्यु खून की कमी से होती है।

### स्वास्थ्य

हर साल ५ लाख लोग क्षय रोग से मर जाते हैं।

हर साल, मृत्युको की संख्या में से एक तिहाई पाँच साल से कम उम्र के बच्चे होते हैं।

कम से कम ४७ प्रतिशत बच्चे तीव्र कुपोषण से ग्रस्त हैं।

भारत में प्रति व्यक्ति के स्वास्थ्य पर खर्च का दर १८ प्रतिशत है। विश्व की तुलना में यह बहुत कम है। स्वास्थ्य पर खर्च के मामले में भारत १९२ देशों में से १८९ स्थान पर है।

एक प्रक्षेपणास्त्र पर जितना खर्च होता है उतने ही पैसे से ३७,००० गाँवों में पीने का पानी पहुँचाया जा सकता है।

### अर्थ व्यवस्था

‘भारत उदय’ अभियान के तहत उत्पादन क्षेत्र की पुनः स्थापना पर जोर दिया जाता है। लेकिन भाजप के कार्यकाल में उत्पादन दर ५.२ प्रतिशत था, हालांकि इसके पहले यही दर ९.५ प्रतिशत था। उत्पादन के ज्यादातर सभी क्षेत्रों में विकास के दर गिरे हैं।

हमारी आरक्षित विदेशी मुद्रा निधि का बड़ा भाग अल्पकालिक ऋण और अस्थिर पूँजी बहाव से बना हुआ है।

जहाँ तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का प्रश्न है, हम किसी के भी नजर में नहीं हैं। २००२-०३ में ४.७ अरब डॉलर इस खाते में आए। चीन की तुलना में यह १०% प्रतिशत भी नहीं है।

अंग्रेजी पत्रिका “द इकॉनमिस्ट” ने हाल ही में भारत का सर्वेक्षण करवाया। पत्रिका का मानना ही की भारत की हालत खराब है। बढ़ते हुए वित्तीय घाटे के चलते, सरकार आधुनिक संरचना शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में खर्च नहीं कर पा रही है।

नब्बे के दशक के मुकाबले, कर और सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का अनुपात घटा है। भारत में यह ८-९ प्रतिशत है, हालांकि युरोप में यह ४० प्रतिशत है और अन्य विकसित देशों में ३० प्रतिशत है।

केन्द्रीय सरकार को कुल शेष देयता भाजपा कार्यकाल में दुगना हुई है।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की ४० प्रतिशत सम्पत्ति सरकारी ऋण में फँसी हुई है। केन्द्रीय सरकार का संचित ऋण आज सकल घरेलू उत्पाद का १० प्रतिशत है। विभिन्न करों से जमा किया गया राशि का आधा हिस्सा सिर्फ ब्याज अदा करने में जाता है।

भाजप के कार्यकाल के पहले तीन सालों में संगठित क्षेत्र ने ७ लाख नौकरियां खोईं।

सन २००२ में ही, पुलिस के आँकड़ों के मुताबिक, २,५८० किसानों ने कर्ज से त्रस्त आँध्र के विभिन्न गाँवों में होकर आत्म हत्यायें कीं।

स्वतंत्र भारत कि किसी भी सरकार की तुलना में, एन डी ए सरकार ने आधुनिक संरचना और आर्थिक विकास पर कम उत्पादक विवेक किया है।

जनवरी २००२ में जब ५ करोड़ लोग भूखमरी से जूझ रहे थे, भारतीय खाद्य निगम के गोदामों ने ६.२ करोड़ टन अनाज सड़ रहा था। यह सबसे बड़ा कीर्तिमान है।

## शिक्षा

भारत की ३४ प्रतिशत आबादी अशिक्षित है।

सरकारी सर्व शिक्षा अभियान का लक्ष्य था कि ६-११ साल के बच्चों को सन २००३ तक स्कूल में दाखिल करना चाहिए। यह लक्ष्य २०१५ से पहले प्राप्त नहीं होगा।

## अर्थ व्यवस्था

ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाएं खत्म हो गई हैं। सन १९९३ के मुकाबले, सन १९९९-२००० में ग्रामीण रोजगार दस लाख की संख्या से घट गई है।

सन २००१ में सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा करोड़ टन अवाज बेचा गया, जबकि १९९१ में २.१ करोड़ टन बेचा गया था। सन २००२ में जब करोड़ों लोग भूखमरी से जूझ रहे थे, एनडीए सरकारने १.२४ करोड़ अनाज निर्यात किया।

अन्य देशों की तुलना में भारत के अमीर करदाता बहुत कम कर का भुगतान करते हैं।

सन २००३-२००४ का तीसरा त्रमासीक में GDP का अनुमानित दर १०% है। उसपर कृषि क्षेत्र के १६.९% GDP का भारी प्रभाव है। लेकिन कृषि क्षेत्र के वृद्धि दर पर सरकारी नीती है वो तो केवल अच्छी वर्षा की ही देन है। और कुछ पिछले वर्ष कृषि GDP का जानबुझकर कम आंकने के कारण है। उधर भारत का तेल आयात खर्च आसमान छू रहा है। २००२-०३ में भारत का तेल आयात खर्च २० बिलियन डॉलर है। जब की यही १९९८-९९ में ६.४ बिलियन डॉलर था।

## पर्यावरण

वारेन एन्डरसन के प्रत्यार्पण के दस्तावेज आज भी विदेश

मंत्रालय में घुल खा रहे हैं। यह वही अपराधी एन्डरसन है जो युनियन कारबाईड का प्रमुख १९८४ में भोपाल में गैस कांड हुआ, जिसमें ३,३०० लोग मरे और हजारों लोग पीड़ित हुए।

सरकार यह स्वीकारती है कि बड़े बांध परियोजनाओं से विस्थापित ४ दशलक्ष लोगों का पुनर्वसन अभी तक नहीं हुआ है। जहाँ तक घातक रसायनों का प्रश्न है।

भारत में १०,००० टन कीटनाशकों का उत्पादन होता है इसमें से कई घातक रसायन हैं जो अन्य देशों में प्रविर्बधित हैं। घातक रसायनों के मामले में एशिया में हमारा स्थान अव्वल है, भोपाल गैस कांड के अपराधियों के प्रत्यार्पण के मामले में भी सरकार कुछ नहीं कर रही है।

## आजादी और दमन

गुजरात के हिंसा में २००० से ज्यादा लोग मारे गये और १.४० लाख लोग घर छोड़ कर भाग गये। दो साल बाद भी इन संगीन अपराधों के लिए किसी को भी सजा नहीं मिली है।

आर्दशवादी अभियता सत्येंद्र दुबे को बिहार में इसलिए मौत के घाट उतारा गया क्योंकि उसने प्रधान मंत्री के सुवर्ण चतुर्भुज परियोजना में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर किया था। जेलों में सलाखों के पीछे होनेवाली मौतों की संख्या भी बड़ी है। पोटा के तहत आदिवासी, बच्चे और महिलाएँ भी गिरफ्तार की जा रही हैं।

स्वमान्य सांस्कृतिक पट्टेदारों ने संगीतकारों, चित्र निर्देशकों, कलाकारों, रंगकर्मियों बुद्धिपीवियों इतिहासकारों पर हमले किये हैं।

□ □ □

## आईये, जरा सच्चाई को जानने की कोशिश करें।

आप देश के सजग, सचेत और चिन्तनशील नागरिक हैं सोच-समझ कर ही अपना अन्मोल वोट दीजिये।

भारत के इतिहास के सबसे भीषण जन संहार के सिर्फ दो साल बाद हमें यह कहा जा रहा है कि “भारत उदय” हो रहा है। उस हिंसा की बर्बरता और व्यापकता ने मानवीय कल्पना तक को चकित किया था। हम आज भी गोधरा कांड की तह तक नहीं जा पाये हैं - आखिरकार अगर हम मान भी लेते हैं कि हिंसा की चिंगारियां गोधरा कांड से ही फैलीं, तो गोधरा के दोषी कौन हैं? दो साल बाद भी सच्चाई पर पर्दा क्यों? जैसा कि गोधरा के पीड़ितों ने शिकायत की है, गुजरात की न्याय व्यवस्था इतनी चरमरा गई है कि जब तक सारे मामले गुजरात के बाहर स्थानांतरित नहीं किए जायेंगे, न्याय प्राप्त करने की हर कोशिश विफल होगी। इन्हीं परिस्थितियों और भावनाओं को भुन कर बाद में वोट बटोरे गये।

इस बार सारा देश वोट डालने जा रहा है। लेकिन अब भाजप ने अपनी रणनीति बदली है और NDA सरकार के उपलब्धियों के बलबूत गौरव का अलख जगा रही है। हमें यह विश्वास दिलाया जा रहा है कि हम अन्य विकसित देशों की तरह बनने जा रहे हैं। इस दावा की पूर्ति ज्यादातर पिछले साल के कुछ आँकड़ों से की जा रही है। असलियत की अस्वीकारता ही वह लरी है जो ‘खुश रहो’ (फील गुड) को ‘नफरत करो’ (अल्पसंख्यकों) से जोड़ती है। आज यह अस्वीकार किया जा रहा है कि गुजरात में व्यापक स्थर पर बलात्कार और हत्याएं हुई और असंख्य गुन्हेगार आजाद घूम रहे हैं।

‘भारत उदय’ में यह अस्वीकार किया जा रहा है कि बहुसंख्यक जनता पोषण आहार, स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, सफाई के प्रबन्ध, हिंसा से संरक्षण के सवाल से आज भी जूझ रही है। लिंग, धर्म, जाति और वर्ग के आधार पर आज भी भेद-भाव फैला हुआ है। (अभाव, अपवर्जना, असमानता और हिंसा आज भी व्याप्त हैं। ऐसे में अगर सरकार का मानना है कि ‘भारत उदय’ हो रहा है तो हमें भ्रमित किया जा रहा है।)

भाजप एक व्यापक आन्दोलन का हिस्सा है जिसके द्वारा भारतीय समाज को एक आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राज-- में परिवर्तित होने से रोका जा रहा है। इस अभियान के प्रमुख संघटक आर एस एस और वि.एच.पी. हैं जोकि जनवाद को ही उखाड़ फेंकना चाहते हैं। इस आन्दोलन के संघटक अलग-अलग स्वरों में बालते हैं और कभी कभी यह भी लगता है कि इन में अन्तराविरोध है।

**सजग मतदान अभियान द्वारा जारी**

# लखलखता भारत? काळोखी वास्तव

## काळोखी तथ्य

### बालके

१. अतिसारासारख्या सहज प्रतिबंध होऊ शकणाऱ्या रोगांमुळे प्रतिवर्षी ७ ते ८ लाख मुले मृत्यू पावतात.
२. जगातील एकूण कुपोषित बालकांपैकी ४०% बालके भारतातील असतात.
३. जगातील सर्वाधिक बाल कामगार व रस्त्यावरील मुलांचे प्रमाण भारतात सर्वाधिक आहे.
४. जगातील सर्वाधिक अंधमुले भारतात आहेत सुमारे २,५०,००० एवढी त्यांची संख्या आहे.

### स्त्रिया

१. स्त्रियांच्या विरोधातील घडलेले गुन्हे - २००० साली १,५०,००० एवढे होते. राष्ट्रीय गुन्हे नोंदणी विभागाने केलेल्या नोंदीमध्ये १९९८ साली ही संख्या १,३०,००० एवढी होती.
२. १९८७ साली १६ वर्षांपूर्वी सतीप्रथेच्या उदात्तीकरणाच्या प्रकरणात २२ खटले दाखल झाले होते. ३१ जानेवारी २००४ साली जयपूर येथील सतीप्रथा प्रतिबंधक तथा सेशन कोर्टाने, ४ खटले निकालात काढले. आरोपमुक्त ११ व्यक्तींमध्ये माजी मंत्री आणि राजस्थान भा.ज.पा.च्या वरिष्ठ नेत्यांचा समावेश आहे.
३. स्त्री-पुरुष लोकसंख्या प्रमाण विचारात घेता, भारतात, दर १००० पुरुषांच्या तुलनेत स्त्रियांचे प्रमाण फक्त ९३३ आहे. जागतिक स्तरावर ही सरासरी ९९० एवढी आहे. सर्वाधिक लोकसंख्या असलेल्या ६ देशांपैकी भारताचे स्त्री-पुरुष लोकसंख्या प्रमाण हे सर्वात कमी आहे.
४. बाळंतिणीच्या होणाऱ्या मृत्युच्या संख्येच्या क्रमवारीत जगात भारताचा दुसरा क्रमांक असून, १ लाख बालकांना जन्म देतेवेळी मरणाऱ्या स्त्रियांचे प्रमाण ३८५ ते ४६० एवढे आहे. जवळपास १ लाख २५,००० स्त्रिया या गरोदरपणी आणि गरोदरपणातील आजारांमुळे प्रतिवर्षी मरतात. भारतात प्रतिवर्षी होणाऱ्या मातांच्या मृत्युपैकी पंडुरोगाने मरणाऱ्या मातांचे प्रमाण २०% असते.
५. भारतीय स्त्रीचा सरासरी शालेय शिक्षण काळ हा १.२ वर्षे आहे.
६. लोकसभा सदस्यांपैकी स्त्रियांचे प्रमाण सध्या केवळ १०% हून कमी आहे.

### स्वास्थ्य

१. प्रतिवर्षी ५,००,००० भारतीय लोक क्षयरोगाने मृत्युमुखी पडतात. दोघांपैकी एका भारतीयाला क्षयरोगाचे सूक्ष्मजंतू संसर्ग दूषित करतात.
२. जगात दुसऱ्या क्रमांकावरील सर्वाधिक लोक भारतात एच. आय. व्ही / एडसप्रस्त जीवन कंठत असतात.
३. देशातील १/३ हून अधिक मृत्यू ५ वर्षांखालील मुलांचे होतात.
४. ५ वर्षांखालील ४७% मुले गंभीररित्या व दीर्घकालीन अवस्थेत, कुपोषित आहेत.

५. दरडोई किमान आरोग्य खर्च करणाऱ्या देशात भारताचा दुसरा क्रमांक लागतो. एकूण होत असलेल्या आरोग्यावरील खर्चापैकी भारत सरकार जो खर्च करते हे पाहता भारताचा क्रमांक, जगाच्या क्रमवारीमध्ये एकूण १९२ देशात, १८९वा क्रमांक लागतो.
६. एका क्षेपणास्त्र उत्पादनाचा खर्च = ३७,००० खेड्यांना पाणी पुरवठ्याचा खर्च.

### अर्थव्यवस्था

१. लखलखत्या भारतात उत्पादनात सुधारणा झाली असल्याचा दावा केला जातो मात्र ५ वर्षांच्या भाजपाच्या कारभाराच्या काळात पूर्वीच्या तीन वर्षांच्या तुलनेत ५.०२% एवढेच आहे. हे प्रमाण पूर्वी ९.४% एवढे होते. दोन आकडी उद्योग समुहात वाढ झपाट्यानी घसरली आहे.
२. २००३-२००४ च्या तिसऱ्या तिमाहित सकल राष्ट्रीय उत्पन्नाचा वाढणारा दर हा अंदाजे १०.४% एवढा झाला आहे. कृषी क्षेत्रात सकल राष्ट्रीय उत्पन्नात १६.९% वाढ झाली. याचा सरकारी नीतीशी काहीही संबंध नाही. वरूणराजाच्या कृपेने पडलेला पाऊस गेल्या दशकात सर्वाधिक होता. आणि त्यातून उपजलेले प्रचंड धान्य तसेच अगोदरच्या वर्षाची वाढ जाणीवपूर्वक कमी दाखविली गेली. यातून हा चमत्कार दिसतो आहे. १९९८-१९९९ विचार करता कच्च्या तेलाची आयात ६.४ अब्ज डॉलर्स होती. तर सद्य आर्थिक वर्षात ही आयात २० अब्ज डॉलर्स एवढी महाकाय झाली आहे. ही न्यूनता आहे.
३. परकीय चलनाच्या गंगाजळीपैकी मोठा वाटा हा अल्पकालीन कर्ज (अनिवासी भारतीयांच्या ठेवी) आणि अस्थिर भांडवली ओघ (वित्तिय संस्थांची गुंतवणुक) यामुळे आहे. हेच आपल्याकडे उपलब्ध असलेले परकीय चलन आहे.
४. परकीय प्रत्यक्ष गुंतवणुकीच्या संदर्भात भारत जागतिक नकाशावर कुठेच नाही. आपल्या देशात परकीय प्रत्यक्ष गुंतवणुकीच्या रूपाने ४.७ अब्ज डॉलर्स २००२-२००३ या काळात आले, चीनशी तुलना करता हे फक्त १/१० एवढेच आहे. या वर्षी तर आपल्याकडे वाहणाऱ्या ओघात ४०% एवढी तीव्र घट होण्याची शक्यता आहे.
५. 'ईकॉनॉमिस्ट' नावाच्या नियतकालिकाने केलेल्या सर्वेक्षणानुसार, देशाची आर्थिक स्थिती नाजूक आहे. (२१ फेब्रुवारी २००४) अंदाजपत्रकांतील वाढत्या तुटीमुळे सरकारने आरोग्य व शिक्षण या सारख्या पायाभूत सुविधांवरील खर्चात कपात केली आहे.
६. अन्य देशांच्या तुलनेने या देशातील श्रीमंत करूपाने देशाला फारच थोडे योगदान करतात. १९९० च्या सुरुवातीला कर व एकूण राष्ट्रीय उत्पन्नाच्या असलेल्या प्रमाणात घट झाली आहे भारताचे करभाग प्रमाण हे ८ ते ९% आहे. हेच प्रमाण ३०% ओ.ई.सी.डी. देशांचे आहे. ४०% युरोपियन युनियनचे आहे.
७. सकल उर्वरित दायित्व हे एनडीए सरकारच्या कालावधीत दुप्पट झाले आहे. (१९.६%)
८. सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांच्या मत्तांचा ४०% भाग हा सरकारी कर्जात आहे. (ओ.ई.सी.डी. देशांमध्ये हे प्रमाण शून्य टक्के आहे.) केंद्र सरकारचे वाढीव कर्ज हे सकल राष्ट्रीय उत्पन्नाच्या ९०% आहे. सरकारच्या सकल कर

महसुलाचा अर्धा वाटा हा व्याज फेडीत जातो.

९. भाजप सरकारच्या पहिल्या तीन वर्षांच्या कालावधीत संघटित क्षेत्रात ७ लाख लोक बेकार झाले आहेत.
१०. पोलीस नोंदणीनुसार २००२ सालातच कर्जबाजारी होऊन आंध्रप्रदेशाच्या विविध जिल्ह्यांत, २५८० शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केल्या.
११. पायाभूत सुविधा आणि आर्थिक वाढ यामध्ये उत्पादक गुंतवणूक (खऱ्या दरडोई मापनात) म्हणून स्वतंत्र भारतातील कुठल्याही सरकारपेक्षा एनडीए सरकारने सर्वात कमी खर्च केला आहे.
१२. जानेवारी २००२. ५० दशलक्ष माणसे भूकबळीच्या वेदीवर चढत असताना अन्नमहामंडळाकडे ६२ दशलक्ष टनाएवढ्या अन्नधान्याच्या राशीच्या राशी पडून होत्या. सडून जात होत्या. हा तर एक सार्वकालिक किर्तीमान आहे.
१३. १९९१ साली २१ दशलक्ष टनाएवढे अन्नधान्य सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेद्वारा वितरीत केले गेले. २००१ साली त्याचे वितरण जेमतेम १० दशलक्ष एवढे होते. तीव्र दुष्काळी वर्षात जेव्हा कुपोषण मोठ्या प्रमाणात फैलावत होते, त्याच काळात एनडीए सरकार आपल्या अन्नधान्याच्या साठ्यातून १२.४ दशलक्ष धान्य निर्यात करत होते.
१४. बँकांक स्थित पोलिटीकल अँड इकॉनॉमिक रिस्क कन्सलटन्सी लिमिटेड च्या अहवालानुसार आशिया देशात भ्रष्टाचाराच्या क्रमवारीत भारताचा क्रमांक दुसरा लागतो. भ्रष्टाचाराची निर्देशांक श्रेणी १०च्या मोजपट्टीवर ८.९ एवढी आहे.

### शिक्षण

१. भारतात लोकसंख्येच्या प्रमाणात ३४% लोक निरक्षर आहे.
२. खूप ढोल बडवलेले असे सर्व शिक्षण अभियान आहे. ६ ते ११ वर्षांखालील सर्व मुलांना २००३ सालात शाळेत भरती करण्याचे आश्वासन या अभियानात होते. युनेस्कोच्या पाहणीनुसार हे लक्ष २०१५ सालापर्यंत सुद्धा गाठणे

अशक्यप्राय आहे.

### पर्यावरण

१. बहुतेक देशात बंदी आणली गेलेली जंतुनाशके भारतात वापरली जातात. ९० हजार टनाएवढे जंतुनाशकाचे उत्पादन भारतात होते. धोकादायक रसायनांच्या निर्मितीमध्ये आशियात भारत सर्वात अग्रसेर आहे.
२. वॉरेन एन्डरसनच्या प्रत्यार्पणाचे दस्ताएवज आजही विदेशी मंत्रालयात धुळ खात पडले आहे. १९८४ साली भोपाळच्या वायूगळती दुर्घटनेत ३३०० लोक मरण पावले तर हजारो लोक रोगग्रस्त झाले. वॉरेन एन्डरसन हा युनियन कार्बाइडचा प्रमुख अधिकक्षक होता.

### स्वातंत्र्य आणि दमन

१. २००० हून अधिक लोक मारले गेले आणि सुमारे १,४०,००० लोक आपले घरदार सोडून २००२ साली गुजरातमधून पळून गेले. या भयानक गुन्ह्यासाठी जे जबाबदार आहेत त्यांच्याविरुद्ध एकही खटला दाखल केला गेलेला नाही.
२. स्वप्राळू आदर्शवादी सत्येंद्र दुबेंसारख्या अभियंत्याला त्याच्या प्रामाणिकपणासाठी प्राणाला मुकावे लागले. पंतप्रधानांच्या गोल्डन क्वाड्रीलेंटल मध्ये घडलेला भ्रष्टाचार त्यांनी उघडकीस आणला म्हणून ही किंमत त्यांना मोजावी लागली.
३. तुरुंगात खिंतपत पडलेल्या लोकांच्या मृत्यूंच्या संख्येत सतत वाढ होत आहे. तसेच कुप्रसिद्ध पोटा या कायद्याखाली आदिवासींना, अल्पवयीन मुलांना तसेच स्त्रियांना अटक करण्याच्या संख्येतही वाढ होत आहे.
४. 'भारतीय संस्कृती'चे स्वयंनियुक्त संस्कृती संरक्षक संगीतकारांवर, चित्रपट निर्मात्यांवर, कलाकारांवर, रंगकर्मींवर, विद्याशाखातज्ञांवर तसेच इतिहासकारांवर सतत हल्ला करत असतात. हे सांस्कृतिक आक्रमण आहे.

□□□

### आपल्या अंतर्मनाला साद द्या, आतल्या आवाजाने मत द्या.

भारतीय इतिहासातील सर्वात भयानक मानव संहाराच्या बरोबर दोन वर्षांनी आपल्याला सांगण्यात येत आहे की भारत लखलखत आहे. कल्पनाशक्तीच्या पलीकडचा हिंसेचा धिंगाणा भयानक अमानुष पाशवीपणाचे दर्शन आपल्याला घडवले गेले. गोघ्रापासून सुरु झालेल्या या हिंसाचाराला खरे जबाबदार कोण आहेत हे आजतागायत आपल्याला कळलेले नाही. गुजरातची न्यायव्यवस्था इतकी कोलमडून पडली आहे की सारे खटले गुजरातबाहेर स्थानांतरीत केल्याशिवाय न्याय मिळण्याची कुठलीच शक्यता गोघ्रा पिडीतांना दिसत नाही. पूर्वीच्या विधानसभा निवडणुकांच्या वेळेला या दुःखातिकेला प्रदर्शनाची भूमी बनवून त्यात भावना ओतून त्याचे मतात रूपांतर करण्यात आले होते.

ह्यावेळी संपूर्ण देश लोकसभेच्या निवडणुकेला सामोरा जात आहे. पण भाजपने आपली रणनिती बदलली आहे. आणि एका वेगळ्या प्रतीच्या भावनाशिलतेला हवा देण्याचे ठरवले आहे. एनडीएच्या नेतृत्वाखाली भारताने गाठलेल्या साध्यांना एका असीम राष्ट्रीय गर्वस्वरूपात सादर करण्यात येत आहे. सरकार आपल्याला हे समजावू पाहत आहे की आपला देश लवकरच प्रगत देशांच्या पंगतीत जाऊन बसणार आहे. गतवर्षी अर्थव्यवस्थेने जी 'प्रगती' साधली यावरून हे निष्कर्ष काढण्यात आले आहे. 'छान वाटतंय', अगोदरचे 'द्वेष वाटतंय' या मोहिमेत वास्तवतेला नकार देण्याचा एक धागा गुंफला आहे. गुजरात मध्ये मोठ्या प्रमाणात बलात्कार व हत्या झाल्या. आणि गुन्हेगार मोकाट फिरत होते. हे पूर्वी नाकारण्यात आलं तर आज लखलखत्या भारतामध्ये बहुसंख्य लोक अंधारमय जीवन कंठत आहे हे नाकारण्यात येत आहे. या अंधारात सरकारला जर लखलखता प्रकाश दिसत असेल तर ते भ्रमाचा प्रसार करत आहेत असे म्हणावेच लागेल. 'छान वाटतंय' या दाव्याच्या विरोधात वस्तुस्थितीचे भान पुनःस्थापित करणे गरजेचे आहे. एक दक्ष, सजग आणि विचारी नागरीक म्हणून सतर्क राहून आपले मतदान करा.

**सजग मतदान अभियान द्वारा प्रस्तुत**



## Is India *Really* Shining? Some facts

**Children** Every year, 700,000 to 800,000 children die of preventable diseases like diarrhoea.

40% of the world's malnourished children are in India.

India has the largest number of child workers as well as the largest number of street children in the world.

With 270,000 blind children, India is home to the largest number of blind children in the world.

**Women** Violent crimes against women have increased from 130,000 incidents in 1998 to around 150,000 recorded in 2000, according to the National Crimes Record Bureau.

On the 31<sup>st</sup> of January 2004, the Special Court on Sati Prevention cum Sessions Court in Jaipur acquitted all the eleven accused in four of the 22 cases involving glorification of Sati that were filed 16 years ago in 1987. The accused include senior BJP leaders. The BJP-government in Rajasthan has not appealed against the judgement.

The sex ratio at 933 females per 1000 males is much lower than the world average of 990 women per 1000 men. Among the six most populous countries in the world, India's sex ratio is the lowest.

Maternal mortality in India is the second highest in the world, estimated to be in the range of 385 to 460 per 100,000 live births. Close to 125,000 women die from pregnancy and pregnancy-related causes each year. Severe anaemia accounts for 20% of all maternal deaths in India.

Women currently comprise less than 10 % of Lok Sabha members.

The average Indian woman has only 1.2 years of schooling.

**Health** Tuberculosis kills 500,000 Indians each year.

India has the world's second largest number of people living with HIV/AIDS.

Annually, more than one-third of all deaths take place in children under the age of five.

At least 47% of children under five are severely and chronically malnourished.

India's per capita health expenditure is one of the lowest in the world. Moreover, India ranks 189 out of 192 countries in terms of how much the government spends on health as a share of total expenditure on health!

The cost of one missile production facility = the cost of providing water to 37,000 villages.

**The Economy** In 'India Shining' much is made of

the recovery of manufacturing. But the average annual growth of manufacturing has been substantially lower in the five years of BJP rule than in the previous three-year period, 5.2% against 9.4%. Growth fell sharply in almost all the main manufacturing sectors in this period.

The GDP growth rate figures for the 3rd quarter of 2003-2004, estimated at 10.4%, are largely influenced by the 16.9% growth in agricultural GDP. This has little to do with government policy and reflects a series of bumper crops (the best monsoon in a decade) and some degree of deliberate under-estimation of the previous year's agricultural growth. On the minus side, crude oil imports in the current fiscal will be in the region of \$ 20 billion compared to \$ 6.4 billion in 1998-99, over three times more!

The bulk of our foreign exchange reserves consists of foreign currency assets made up of short-term debt (NRI deposits) and volatile capital flows (FII investments).

A recent survey of India in *The Economist* refers to the 'appalling state' of the country's finances (21-2-2004). A mounting fiscal deficit hampers growth by limiting government spending on infrastructure, education and health.

The rich contribute much less by way of taxation in India than in other countries. The ratio of tax to GDP is lower today than it was at the beginning of the 90s. India's 8 to 9% tax share ratio (tax to GDP ratio) should be compared with 30% in the OECD and almost 40% in the European Union.

The total outstanding liabilities of the Central Government have doubled (grown 99.6%) over the period of BJP rule.

40% of the public sector banks' assets are held in government debt (compared to 0% in the OECD countries.) The cumulative debt of the Central Government is now 90% of GDP! The government spends about half its total tax revenues on interest payments alone.

Over 7 lakh jobs have been destroyed in the organised sector in the first three years of the NDA government.

In 2002 alone, according to police records, as many as 2,580 farmers killed themselves in various districts of Andhra Pradesh because of mounting debt.

The NDA Government has spent *less* (in real per capita terms) on productive investment for infrastructure and economic growth than any government in independent India.

In January 2002, when some 50 million people were in the grip of starvation, the buffer food stocks lying with the Food Corporation of India amounted to 62 million tonnes of foodgrains, an all-time record.

Hardly 10 million tonnes of foodgrains was sold from the Public Distribution System in 2001 compared to nearly 21 million tonnes in 1991. In a severe drought year, when malnutrition was widespread, the NDA government *exported* a record 12.4 million tonnes of foodgrains out of food stocks.

Employment in rural areas has collapsed. Data on rural employment for 1999-2000 indicates an absolute decline in the number employed in agriculture by 5 million compared to 1993.

The Hong Kong-based Political and Economic Risk Consultancy Ltd has rated India the second most corrupt country in Asia, with a corruption index grade of 8.9 on a scale of 10.

**Education** At least 34 per cent of India's population is illiterate.

The government's much-touted Sarva Shiksha Abhiyan declared it would ensure that all children between 6-11 years of age are enrolled in school by 2003. According to Unesco, India will not be able to meet these targets even by 2015.

**Ecology** With 90,000 tonnes of pesticides, India ranks as Asia's largest producer of these hazardous chemicals, many of which are banned in other countries.

Papers related to the extradition of Warren Anderson are still lying with the Ministry of Foreign Affairs in Delhi. Anderson was CEO of Union Carbide at the time when Carbide's Bhopal factory gassed and maimed thousands of local residents in 1984.

**Freedom and Repression** Over 2000 people were killed and about 140,000 fled their homes in Gujarat in 2002. *Yet not a single prosecution has resulted from the terrible crimes that caused that situation.*

Idealistic young engineer Satyadev Dubey paid with his life for his honesty and exposure of the corruption in the Prime Minister's Golden Quadrilateral.

There has been an increase in the number of custodial deaths, in the arrests of tribals, minors and women under the infamous POTA and in harassment of the media.

Our self-appointed custodians of 'Indian culture' have repeatedly attacked musicians, film-makers, artists, theatre personalities, academics and historians, believing that the sword is mightier than the pen.

□ □ □

---

## Let your conscience vote!

Two years after the worst genocide in India's history, we are told that India is shining. That orgy of violence staggered the imagination for the kind of brutality it displayed. If the violence started with Godhra, the fact remains that even today, two years down the line, we still do not know who was responsible for the tragedy there. And why is that? As relatives of the Godhra victims have complained, the collapse of the judicial process in Gujarat makes it impossible for them to obtain justice unless the cases are transferred out of the state. The site of that awful tragedy became an exhibition ground for the feeding of emotions that could be converted into votes.

This time the whole country is going to the polls but the BJP has changed lanes and decided to pump up a different kind of emotionalism, namely, one of boundless national pride in the achievements of India under the leadership of the NDA. The government wants us to believe that we are now on the way to becoming no different from the other advanced countries of the world. These claims are mainly based on the way the economy is supposed to have performed over the last year.

The thread that links this 'feel good' campaign to the earlier 'feel hate' one is the BJP's extreme denial of reality. In the case of Gujarat it is denied that widespread rape and killing occurred and that there are hundreds of criminals at large. In 'India shining' it is denied that the condition of the vast majority of the population is closer to darkness than to light in every significant field. Any government that believes a society can shine when it is shackled in these multiple ways is simply peddling illusions.

The time has come to reinstate a sense of reality against the feel-good claims.

Take a look at the massive *failures of governance* that make India the one big country in the world with the lowest public spending on health; that allow 47% of our under-fives to be severely and chronically malnourished; that allow 55% of women to remain illiterate, millions to be out of work and lack social security, and thousands to be killed or mutilated without the least redress for the surviving members of their families. As an alert, aware and thinking citizen of this country, cast your vote with care.

*Issued in the public interest by VOTE WITH YOUR CONSCIENCE CAMPAIGN, Mumbai*